Interacting with party workers at Vikas Parv celebrations,

Chandni Chowk, New Delhi, 27.06.2016

धन्यवाद आशीष जी अगर आपकी अनुमति हो तो मैं बैठके ही बोलूं, वैसे अपने पुराने ज़माने की बैठकें अच्छी होती थी, ज़मीन पे बैठते थे, साथ में बैठते थे, ये इतनी दूरियां नहीं होती थी उस ज़माने में | पुनः एक बार शायद वो जनसंघ के दिन या किसपे जाना चाहिए जब लोगों के साथ बातचीत सीधा साँझा हो और ये ऊपर और नीचे बिठाने का काम नहीं हो, मुझे तो आपने और भी ख़राब कर दिया मेरे वरिष्ट नेता और मंत्री हर्ष वर्धन जी यहाँ बैठे हैं मुझे बड़ी शर्म आ रही है यहाँ बैठने के लिए पर ये इस पार्टी की विशेषता है और ये इस पूरी व्यवस्था की विशेषता है जिसमें हम सब शामिल हैं कि पद कितना भी बड़ा हो छोटा हो लेकिन व्यवस्था जब एक बार बनती है तो आज मान्य हर्ष वर्धन जी केंद्रीय मंत्री के नाते यहाँ पे नहीं आए हैं यहाँ के सांसद के नाते आए हैं, और मैं उनसे उम्र में भी छोटा, कद में भी छोटा, पद में भी छोटा लेकिन आज की व्यवस्था के हिसाब से मुझे यहाँ पे बैठना पड़ा | ये एक तरीके से दर्शाता है इस पूरे हमारे भारतीय जनता पार्टी और हमारे पूरे वैचारिक परिवार का जो सबसे बड़ा मूलभाव है, मैं समझता हूँ इस मूल भाव को अगर इज्ज़त दें तो आज का ये हमारा मिलना जैसा माननीय सुरेश जी ने कहा एक आयोजन के हिसाब से है, मान्य कठेरिया जी, सुरेश जी और मैं हम आपके पास आए हैं, आपसे मिलने आपसे विचार-विमर्श करने | सब वक्ताओं ने कहा हम कम बोलेंगे लेकिन मैं ज्यादा बोलने वाला हूँ, मैं आपको कोई आश्वासन नहीं दिला रहा हूँ कि कम बोलने वाला हूँ इसलिए नहीं कि मुझे उपलब्धियां गिनानी हैं, मैं कोई उपलब्धि के बारे में जिकर नहीं करूँगा, कोशिश करूँगा कम उपलब्धियों पे जाऊं, मेरी कोशिश रहेगी कि इस सरकार की सोच क्या है वो मैं आपके साथ शेयर करूँगा और अगर हम उसके बाद जब चर्चा करें उसमें आप हमारी सोच पे कुछ सुधार दे सकें, कुछ आपके अनुभवों से, आपके स्वयं के विचारों से हमें अवगत कर सकें हमें भी उसका लाभ मिले तो मैं समझता हूँ आज की ये विकास पर्व की यहाँ की बैठक सार्थक होगी, बहुत बड़ी उपलब्धि होगी हमारे लिए भी | सतीश जी बहुत-बहुत धन्यवाद, मैं माफ़ी चाहूँगा विलंब भी हुई मैं actually मेट्रो से आता तो शायद ज्यादा अच्छा रहता अभी पछता रहा हूँ पर अगली बार जब आप बुलाओगे तो अवश्य मेट्रो से आऊँगा और समय पे आऊँगा | ये स्थान वास्तव में इतना सुन्दर है मैं आज पहली बार आया हूँ चांदनी चौक में campaigning मैंने स्मृति जी के लिए भी की थी 2004 में | इस बार भी चुनाव में इस इलाके में रहा लेकिन ये टाउनहॉल पहली बार देख रहा हूँ और मैंने अभी-अभी अध्यक्ष जी को पूछा था कि इसकी मरम्मत की जाए, इसको हेरिटेज के हिसाब से बनाया जाए तो चर्चा हो रही थी कि ये काम आवश्यक है लेकिन इसमें अभी तक शायद कोई पहल नहीं हुई है | तो डॉक्टर साहब और मैं ! हम दोनों इस विषय को देखेंगे किस प्रकार से या तो ह्रदय के अंतर्गत जो Heritage Cities का कार्यक्रम Urban Development Ministry ने लिया है, अगर उसके अंतर्गत कोई कठिनाई आती है तो मैं अपनी पॉवरग्रिड एक कंपनी है जो दिल्ली में भी कई जगह काम करती है और NTPC जो थोड़े बिजली घर भी यहाँ चलाती है उन दोनों की मदद लेके अगर आप एक छोटी दो तीन लोगों की कोई टीम बना दें या नार्थ के अपने मेयर और दो तीन और लोग, पार्टी का एकआद व्यक्ति, कोई एकआद अनुभवी लोकल व्यक्ति ऐसे तीन लोगों की एक टीम बन जाए जो विचार करे इसके ऊपर कैसे काम करना, क्या करना, कुछ अच्छे हेरिटेज के experts लाना तो मैं समझता हूँ आज के इस विकास पर्व का इतना तो ज़रूर स्वाद और लाभ लेलें कि इस बिल्डिंग को हेरिटेज के रूप में ले ले, वास्तव में बड़ी सुन्दर है it almost looks like a church in Italy or in France and पूरा इसमें पक्ष-विपक्ष सब पूरी एक तरीके से ऐतिहासिक सी जगह है तो इसपे हम मिलके काम करें पार्टी और सरकार | एक दो चीजें सिर्फ प्राथमिक बोलना चाहूँगा आशीष जी ने तो ऐसा कर दिया जैसे मेरा काम सिर्फ 18,452 villages में बिजली पहुँचाना है उसके इलावा कुछ नहीं, I wish it was true फिर तो मैं बहुत जल्द उस काम को करके ज़रा आराम करता, लेकिन पूरा बिजली और कोयले का जो विभाग है इसमें बहुत सारी चुनौतियाँ मुझे मिली थी आप सब को भली-भांति याद होगा जब मैंने शपथ ली 26 May और विभाग संभाला 27 May 2014 को उसके दो या तीन दिन पश्चात ही दिल्ली में बहुत तूफ़ान और आंधी आई थी और एक प्रकार से मेरा तो baptism by fire हुआ था उस दौरान जब पूरे देश में हाहाकार मची | दिल्ली हमारे देश की राजधानी में बिजली न होना एक तरीके से शर्म की बात थी पूरे देश के लिए और मैं समझता हूँ दिल्ली के सभी नागरिकों ने बहुत सहयोग दिया, उन दिनों में रात-रात भर घूमता था मरम्मत कराने के लिए यहाँ की ऊर्जा व्यवस्था को, मैं समझता हूँ वो मेरे लिए blessing in disguise थी क्यूंकि जो वास्तु स्थिति है बिजली विभाग की एक मुंबईकर शायद समझ नहीं सकता था, मुंबई में हमें चौबीस घंटे बिजली का स्वाद मिला है जीवन भर हमारे वहां तो UPS भी नहीं होते है, digiset inverter तो भूल जाओ, कंप्यूटर में uninterrupted power supply unit भी नहीं होता है, We are so much assured of 24 hour power. तो एक प्रकार से शायद भगवन ने सोचा कि ज़रा इसको सिखा दें, समझा दें कि ये कोई इतना सरल काम नहीं है, एक विनायक चैटर्जी Feedback

Infrastructure के विशेषज्ञ Infrastructure के बारे में वो कहते हैं this was not baptism by fire this was baptism by outage. और वास्तव में जो outages की स्थिति उस समय देखी थी उससे बहुत कुछ सीखने को मिला, तुरंत Rs 7,700 करोड़ की पूरी योजना बनी कि नई दिल्ली की ऊर्जा की व्यवस्था को कैसे अपग्रेड किया जाए, सुधार किया जाए उसके तहत बजट में जुलाई में अरुण जेटली जी ने वित्त मंत्री जी ने Rs 200 करोड़ एक Special Grant जो कोई राज्य को अलग से नहीं दिया जाता है दिल्ली के लिए दिया | उस सब के बावजूद सब प्लानिंग हो गई सब identify हो गया काम उसके लिए क्या-क्या करना, substations सब कुछ होने के बाद दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति ये हुई कि सरकार बदली जो केंद्र शासित राज्य के रूप में हम ये सब व्यवस्था देख पा रहे थे वो हमारे कण्ट्रोल में नहीं रही | और मुझे दुःख होता है बताते हुए कि वो लगभग पूरा काम अस्वस्थ सा पड़ा है | मैंने करीब डेढ़ महीने पहले यहाँ की राज्य सरकार को भी बुलाया था चर्चा करने के लिए कि भाई एक वर्ष हो गया है उस प्लान पे आपने क्या क्या काम किया, क्या-क्या उसमें प्रगति हुई है पर दुर्भाग्य से उतनी प्रगति नहीं हुई जिसके कारण आज आप को ये कहना पड़ा कि दिल्ली में भी बिजली की बड़ी गंभीर समस्या पुनः स्थापित हो गई | मेरे अधिकारियों ने कहा कि गर्मी आजकल बढ़ रही है, Climate Change का Impact है तो हमने प्लानिंग थोड़ी excess की करनी चाहिए लेकिन दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति ये थी कि उनका मन बन गया था कि नहीं-नहीं हमारा काम एक दम बढ़िया है सुचारू ढंग से हमने पूरा व्यवस्था बना दिया आपको कोई दखल अंदाजी देनी की आवश्यकता नहीं | मैंने ऑफर भी किया था कुछ काम हो जिसमें हम मदद कर सकते हैं लेकिन वो ऑफर स्वीकार नहीं किया गया, तो दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति है कि ये समस्या रही मैं पुनः एक बार दिल्ली सरकार से चर्चा करूँगा कि अभी भी कम से कम अगले वर्ष के लिए हम अभी से सुधार के लिए अगर काम पे लगें तो मैं समझता हूँ कि आगे चलके सुधार का लाभ आप सब ले पाएंगे |

यहाँ आते-आते मेरे मन में विचार आया कि कल ही इमरजेंसी की वर्षगाँठ थी, मैं रायबरेली गया था कल 26 June था, रायबरेली एक प्रकार से स्थान था जहाँ से पूरा कांड लिखा गया, रायबरेली में चुनाव के दौरान अवैध सरकारी तंत्रों का इस्तेमाल करके उस वक़्त की प्रधानमंत्री जी ने चुनाव जीता था, इलाहाबाद के हाईकोर्ट न्यायलय ने उस चुनाव को रद्द किया और वहां से किस्सा शुरू हुआ था, क्या किस्सा कुर्सी का बोलें या किस्सा आपातकाल का, मैं समझता हूँ चांदनी चौक ने उस आपातकाल के दौरान जिन समस्याओं का सामना किया फिर चाहे वो तुर्कमान गेट की घटनाएं हों चाहे वो जो sterilization के यहाँ पे ज़बरदस्ती sterilization का काम हुआ हो और हजारों कार्यकर्ता संघ परिवार के BJP के सब ने जो त्याग और तपस्या करके आपातकाल के सामने लड़ाई लड़ी मैं समझता हूँ देश के लोकतंत्र पे इससे बड़ा खतरा कभी आज तक उत्पन्न नहीं हुआ है उस खतरे से देश को 1977 में जनता ने बचाया था और 2014 में भ्रष्टाचारी कुशासन से भ्रष्टाचार से लिप्त कांग्रेस के नेतृत्व वाले शासन से और एक प्रकार से एक ऐसी सरकार से जिसके ऊपर पूरे विश्व में बदनामी हुई थी देश की, पूरे देश में जनता पूरी तरीके से नाराज़ थी, पूरी तरीके से उस सरकार की नाकामियों से दुखी थी ऐसी सरकार से छुटकारा 2014 में प्रधानमंत्री मोदी जी को चुनके आप सब ने भेजा इसके लिए सबसे पहले तो मैं आप को बधाई देता हूँ, जैसा सभी माननीय वक्ताओं ने कहा विकास पर्व के दौरान हम अलग-अलग इलाकों में जा रहे हैं, डॉक्टर साहब आपकी तो छ स्थान सुन के मुझे थोड़ी jealousy हो रही है आप हमारे छ स्थान सुनो तो हम कोटा गए राजस्थान में, कोरबा गए छत्तीसगढ़ में, धनबाद गए झारखण्ड में, दरभंगा गए बिहार में पांचवां स्थान ये है पुरानी दिल्ली का जो एक प्रकार से VIP स्थान मान सकता हूँ में, छट्टे स्थान पे मैं नहीं जा पाया विदेश था पर कठेरिया जी और पुजारी जी गए थे अहमदाबाद तो मैंने उसको make up किया कल अमरावती में विकास पर्व का काम करके मेरे महाराष्ट्र में तो इस प्रकार से अन्य अन्य जगह जाने के बाद मैंने अपने बेटे को एक Whatsapp पर मेसेज भेजा था तीन दिन पहले जब मैं दरभंगा से निकला, हमारा family Whatsapp group में मेरी पत्नी और दोनों बच्चों को मैंने लिखा कि वास्तव में मेरा भी 50 वर्ष की आयु में जीवन इतना sheltered रहा कि जब तक ये विकास पर्व के दौरान इस गहराई में एक-एक गाँव में एक एक छोटे शहर में भारत के interiors में कोयले की खदानों में जहाँ काम होता है दरभंगा जैसे एक दम विकास से वंचित प्रदेश में कल रायबरेली में जब तक ये सब देखने का मौका नहीं मिला था तब तक शायद मैंने भी अनुभव नहीं किया की भारत की वस्तु-स्थिति कितनी ख़राब है | मैं सच में प्रधानमंत्री जी और अध्यक्ष अमित शाह जी का धन्यवाद करूँगा कि इस कार्यक्रम की कल्पना से हमें तो ज़रूर मौका मिला आप से संपर्क करने का, आपको दो वर्ष की जानकारियां देने का, कुछ मात्रा में कठेरिया जी, पुजारी जी ने, हर्ष वर्धन जी ने बताया और उपलब्धियों में मैं घंटों बोल सकता हूँ पर उसके बदले में आसान है कि एक मिस कॉल नंबर आपको दे देता हूँ, आप नरेन्द्र मोदी एप को अपने फ़ोन में डाउनलोड कर लो आपको सब जानकारियाँ मिल जाएँगी और मजेदार बात ये है हर्षवर्धन जी अभी कैबिनेट में जब चर्चा हो रही थी तो लगभग ऐसा अनुमान हुआ कि हमारी 700 दिन की सरकार ने ऐसे लगभग 750 बड़े

निर्णय हुए हैं, छोटी-मोटी बातों में मैं नहीं जा रहा हूँ, बड़े निर्णय जिसको game changers कहा जा सके, जो इस सरकार ने मात्र दो वर्ष की अवधि में लिए उसकी रिपोर्टिंग होती है जब हम काउन्सिल ऑफ़ मिनिस्टर्स बैठते हैं; उसमें बताया जाता है काम की प्रोग्रेस क्या है, कमियां क्या है, किस विषय पे हम सबको और विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है | वास्तव में जब उपलब्धियों को मैंने National Executive में रखा था आपको याद होगा प्रधानमंत्री जी का वक्तव्य उन्होंने स्वयं भी उपलब्धियों को देखके पहला कमेंट ये था कि अच्छा इतनी सारी चीजें हुई जब तक एक साथ इसको पिरोते नहीं, एक साथ इसको रखो नहीं तो ध्यान नहीं आता है कि हर क्षेत्र में कितना काम हुआ है, लेकिन पूरी प्रेजेंटेशन के बाद और प्रेजेंटेशन तीन हुई सुषमा जी, प्रकाश जी और मेरी उन तीनों के बाद दूसरी तरफ ये भी लगा कि यार इसमें तो ये नहीं आया, इसमें तो ये बात रह गई, ये उपलब्धि छूट गई, इस योजना का जिक्र नहीं हुआ, और कितनी सारी चीजें हुई जो समय के आभाव में राष्ट्रीय कार्यकारिणी में भी बहुत संक्षिप्त रूप में पेश करनी पड़ी, कहने का तात्पर्य ये है कि आज ये सरकार कोई इन मंत्रियों की या मोदी जी की नहीं है, ये सरकार के लिए आपने खून पसीना बहाया इस सरकार को लाने में उतना ही आपका you are as much a stakeholder आपकी भी उतनी भागीदारी है जितनी और किसी की है | पद पे आज किसी को बिठाया कल कोई नहीं होगा, आपको अटल जी का वो वाकय याद होगा मुंबई के शिवाजी पार्क में उन्होंने कहा था जब वो प्रधानमंत्री नहीं रहे कि पद तो आएंगे-जाएंगे लेकिन मेरे कार्यकर्ता का पद कभी कोई नहीं मेरे से छीन सकता है, उसी प्रकार से हम आज एक कार्यकर्ता भाव से आप के समक्ष आए हैं, एक कार्यकर्ता की ज़िम्मेदारी निभाने आए हैं, सिर्फ चर्चा करने कि क्या हुआ, और क्या हो सकता था, क्या और सुधार हो सकता था | मेरे ख्याल से जब तक हम इस सरकार को अपनाएंगे नहीं, जब तक हम सब विशेषकर कार्यकर्ता बंधू और हमारे वैचारिक परिवार के सभी सम्बंधित लोग ये नहीं समझेंगे कि ये सरकार अपनी है और इसकी सरकार की सफलता और विफलता में हमारी भी भागीदारी है, तब तक कोई सरकार सफल नहीं हो पाएगी और जब भी कुछ लगे कि कोई विषय में कुछ कमी रह गई तो ज़रूर आंकलन लीजिए जैसा सुरेश जी ने कहा कि 66 वर्ष के बनाम 2 वर्ष के कार्यकाल को जब आप रखें तो ज़मीन और आसमान का फर्क है, कोई भी विषय ले लो, उपलब्धियों में कई चीजें पहली बार देश में हुई, कई चीजें ऐतिहासिक हुई, कई चीजें मैं समझता हूँ जैसे अर्थव्यवस्था का सुधार वो डायरेक्टली व्यक्ति को समझ नहीं आता है पर उसका long term लम्बे अरसे तक जो देश के हर एक व्यक्ति के ऊपर प्रभाव पड़ेगा वो शायद विनोद जैन जैसे विशेषज्ञ अच्छी तरह समझा पाएंगे |

पारदर्शिता की जो इस सरकार की प्राथमिकता रही है जिस प्रकार से भ्रष्टाचार-मुक्त शासन देने का प्रयास रहा है मैं समझता हूँ इसके पहले कोई सरकार ने पारदर्शिता और भ्रष्टाचार-मुक्त भारत के लिए इतना प्रयास नहीं किया होगा, लेकिन इन सब उपलब्धियों के बावजूद अगर कोई जानना चाहे कि सबसे बड़ी उपलब्धि क्या है तो मेरा मानना है कि हमारी सबसे बड़ी उपलब्धि हमारे मन की है हमारे सोच की है जो mindset change हुआ है आप याद करिए 2-2.5-3 साल 4 साल पहले जो pessimism cynicism पूरे समझ में था कि ये देश तो ऐसे ही चलेगा हमें तो ऐसे ही जीना है, भ्रष्टाचार तो होना ही है इसके खिलाफ कुछ नहीं किया जा सकता, जो एक नकारात्मक सोच देश में आ गई थी उसके सामने एक सकारात्मक आत्मविश्वास एक हम सब में जो उत्साह है, जो उमंग है वो अगर में मानूं तो सबसे बड़ी उपलब्धि इस सरकार की रही है कि बदलाव की संभावनाएं लोगों को दिखने लगी हैं, महसूस होने लगी हैं और आज जनता उमंग और विश्वास से और ज्यादा अपेक्षा करती है अपनी सरकार से, मैं कई बार मजाक में कहता हूँ कि व्यक्ति उसी से अपेक्षा करेगा जिससे कुछ मिलने की उम्मीद हो, सम्भावना हो, आखिर आप ऐसे व्यक्ति के पास तो नहीं जाएंगे ना जिसके पास क्षमता ही नहीं है आपकी कुछ उम्मीदों को पूरा करने के लिए आप उसी के पास जाओगे जो उम्मीद पूरा करने में जिसके पास कैपेसिटी हो जो पूरा करने की इच्छा रखता हो, तो अगर जनता को उम्मीद है इस सरकार से, जनता सवाल जवाब करती है कि ये क्यूँ नहीं हुआ इसमें और काम की ज़रुरत है तो मेरे जैसा व्यक्ति तो बहुत आनंदमय होता है, मुझे पुनः एक बार प्रोत्साहन मिलता है कि जनता को हमारे पे विश्वास है और हमें इस काम को और तेज़ी से करना है, और अच्छी तरीके से करना है | आखिर सालों-साल का बैकलॉग 66 वर्ष में जो काम की कमियां थी वो हमें विरासत में मिली उसके ऊपर आधारभूत परिवर्तन करना, ऐसा परिवर्तन जो आगे चल के सदियों तक इस देश को सेवा करते रहे वो परिवर्तन साधारण नहीं होता है उस परिवर्तन में प्लानिंग भी ज्यादा लगती है, उस परिवर्तन में सोच विचार भी ज्यादा लगता है, उस परिवर्तन को जल्दबाजी से नहीं किया जा सकता है, जब आप पारदर्शिता से काम करना चाहते हो तो काम को बहुत सुचारू रूप से प्लानिंग करके देश के समक्ष रखना पड़ता है और मैं समझता हूँ इस दो वर्ष में जो फाउंडेशन बनी है जिस प्रकार से macro-economic indicators, अर्थव्यवस्था को सुधार किया, जिस प्रकार से कानून में ऐसे परिवर्तन किए कि आगे चल के कोई भी देश का जो संसाधन है Natural Resources कोयला हो, स्पेक्ट्रम हो, ज़मीन हो, ये अपने चाहिते को अपने सांसदों को, रिश्तेदारों को

कोई बाँट नहीं पाएगा | इसको नीलामी से ईमानदारी से देना पड़ेगा और उस ईमानदारी का पैसा जनता की सेवा में लगाना पड़ेगा इस प्रकार का जो आधारभूत परिवर्तन हुआ है, इस परिवर्तन के पीछे कुछ सिद्धांत रहे हैं, मैं आपके समक्ष वो सिद्धांत रखना चाहूँगा जिससे आपको पता चलेगा कि ये उपलब्धियां कैसे पाई गई और इन उपलब्धियों के पीछे आगे चल के कैसे सुधार इस देश में तेज़ी से होगा, सबसे पहले तो जो मंत्र रहा वो एक निर्णायक सरकार का था जो भी चीजें जो नेतृत्व है it has to be decisive उसने जो निर्णय लेना है वो हिम्मत से लेना होगा डर के सरकार नहीं चलेगी तो एक निर्णायक सरकार जिसने बहुत सारे काम ऐसे किए जो पहले निर्णय लेने के लिए सरकारें डरती थी, दूसरा जड़ पर जाके समस्या की समीक्षा Root cause analysis जो भी समस्या मेरे पास भी कई समस्याएं आईं मैंने कभी भी उस समस्या को हल करने की कोशिश नहीं की, उसकी समीक्षा की कि ये क्यूँ आई समस्या और उसको हल करने का प्रावधान या प्रक्रिया या योजना क्या बन सकती है, एक व्यक्ति या एक कंपनी विशेष सुधार लाने के बदले योजना या पूरे प्रक्रिया में सुधार लाओ तो एक सुधार से पूरे सिस्टम में आप और अच्छा काम कर सकते हो | तीसरा उपलब्धियों पे जोर Outcome orientation, काम तो अधिक होते हैं इस देश में बजट इतने सालों से इस्तेमाल होता है पर हमने बजट पे जोर नहीं दिया हमने उपलब्धि पे जोर दिया आउटकम क्या होगा पैसा खर्च करने का | पैसा तो कम ज्यादा मिल ही जाता है अच्छे काम के लिए कभी पैसे की कमी नहीं होती लेकिन काम से लाभ क्या होगा, किस वर्ग को होगा जो दीन दयाल उपध्याय जी की कल्पना थी कि गरीब से गरीब व्यक्ति के पास इस देश के संसाधनों का पहला अधिकार रहना चाहिए, अन्त्योदय की कल्पना, उसपे हमने काम किया, चौथा Time bound Execution, समय सीमा निर्धारित हो और समय सीमा के हिसाब से काम पूरा किया जाए, पांचवां विषय है कि prioritisation, कौन से विषय पे पहले जोर देना आखिर जब तक पर्याप्त मात्र में कोयला या बिजली न हो तो आगे आप कैसे 24x7 बिजली सबको दे पाओगे, जब तक ट्रांसमिशन लाइनें ना सुधरें तो दक्षिण भारत में बिजली कैसे पहुंचेगी, जब तक distribution का infrastructure नहीं सुधरे तो कैसे दिल्ली में चौबीस घंटे सबको निश्चित Uninterrupted, quality अच्छी बिजली मिलेगी, सस्ती बिजली मिलेगी, तो prioritize करके विषयों पे ध्यान देना और उन विषयों पे जोर लगा के उनको समय सीमा पे ख़त्म करना, साथ ही साथ सबकी भागेदारी, a partnership with all stakeholders आखिर सरकार से निर्णय ले और आपके ऊपर थोप दे उसका तो कोई लाभ नहीं है जब तक सब stakeholder, सब लोग जिनका उस निर्णय में कोई रोल है या जिसको वो निर्णय इम्पैक्ट करता है उससे चर्चा करके समस्या का निदान करना | मैं समझता हूँ कि कई विषय आए मेरे बिजली के क्षेत्र में भी खास तौर पे distribution companies का सुधार Discoms जिसको कहते हैं, उसमें हमने एक उज्जवल डिस्कॉम एस्सोरेंस योजना देश के समक्ष रखी जिसका देश नहीं पूरे विश्व में लोगों ने सराहना की पर वो मेरी योजना नहीं है मेरा रोल उसमें सिर्फ एक कैटेलिस्ट का रहा कि सब stakeholders से चर्चा कर करके चीजों का समाधान कैसे निकालना और सब stakeholders के साथ साझे भागीदारी से काम की आगे कल्पना करना, सातवाँ Technology, Digital India की तो चर्चा आपने सुनी है लेकिन प्रधानमंत्री मोदी जी का विशेष आग्रह रहता है कि अधिक से अधिक Technology का इस्तेमाल करके जनता तक लाभ कैसे पहुंचाएं, आखिर We should not reinvent the wheel जो Technology विश्व में available है उसको लाएं उससे जनता और सरकार के बीच सेतु बनाए, समस्याओं का जल्द से जल्द निवारण हो कैसे Technology का इस्तेमाल करके जनता को अधिक लाभ दे सकें उस पे हमने विशेष बल दिया, आठवां जो अवसरवादी ताकतें थी, Bureaucracy, Paperwork, लाल फीताशाही, Red-tapism इसको कैसे कम करना, आप कभी भी मेरे दफ्तर आ जाएं पूरे खाली corridorcorridors मिलेंगे और वही हर्षवर्धन जी या कठेरिया के यहाँ आपको मिलेगा, सब दलालों को सिस्टम से बहार कर दिया, कोई दलाल वेलकम नहीं है सरकारी दफ्तर में, जिसकी जो समस्या है पत्र लिख दे, ईमेल भेज दें, आप ट्विटर पे भी दूध मांगते हो तो सुरेश प्रभु जी आपका रत्लाम स्टेशन पे दूध पहुंचा देते हैं | समस्याओं का हल किस प्रकार से हो, कागजों को बढाने के बदले सीधा समस्या पे निर्णय लेना और Red-tapism और Bureaucracy को कट करना उसपे हमने विशेष जोर दिया है, मैं अपना अनुभव बताऊँ, मैं नया मंत्री बना था तब तीनों विभाग मिलाके लगभग रोज़ सौ फाईलें मेरे पास आती थी, सौ आहिस्ते-आहिस्ते एक-एक फाइल पे मैं पूछता था कि ये मेरे पास आना क्यूँ ज़रूरी है ?

आपको एक मजेदार बात बताता हूँ, कोयला विभाग में एक linkage committee होती थी जो linkage allot करती थी, सबसे ज्यादा भ्रष्टाचार का काम अगर कहीं हुआ है इस देश में तो वो कोयला विभाग में, उसको साफ करते-करते मुझे लगता है मेरी उम्र थोड़ी और बढ़ जाएगी लेकिन उस linkage committee के मिनट्स हर बार मेरे पास आते थे मैं हर बार पूछता था कि मेरे पास क्यूँ आते हैं ? जो चेयरमैन है वो approve करे मिनट्स और जाएं, वो कहे नहीं आपके पास आने पड़ेंगे ! दो-तीन बार जब ये हुआ तो मैंने बहुत आग्रह से कहा कि मुझे रिपोर्ट दो कि ये क्यूँ आते हैं मेरे पास कौन से rules of business में आते हैं, तो आपको

आश्चर्य होगा जानके कि 2004 में जब UPA की सरकार बनी उस समय के कोयले मंत्री ने शायद दो चार छ महीने के बाद एहसास किया कि उनके पास तो कोई व्यक्ति नहीं आ रहा है कोयले की linkage मांगने, कुछ न कुछ लाभ मांगने, तो उन्होंने निरिक्षा की और पता चला कि कोयले का linkage जो सबसे valuable commodity थी वो तो linkage committee देती है, कोयले का आवंटन उसकी एक अलग committee है, screening committee बोली जाती थी, तो उनके पास तो कुछ आता ही नहीं था, तो उन्होंने तुरंत निर्देश दिया कि ये कोयले की linkage committee की पूरी मिनट्स जब तक मंत्री नहीं approve करे तब तक ये final नहीं होगी और linkage committee की मिनट्स 2004 से मंत्री के पास पास आनी शुरू हुई उसके पहले नहीं जाती थी | मैंने कहा ये तो कमाल है ये तो बहुत आसान है, तो तुरंत मैंने आर्डर किया कि इसको नीचे भेजा जाए, बोले नहीं साहब यहाँ पे किस्सा खत्म नहीं हुआ, कुछ दो-तीन महीने तक ये जो linkage committee की रिपोर्ट आई, मिनट्स आए तो उन्होंने एहसास किया कि अरे ये तो committee meeting हो चुकी meeting में निर्णय हो गया अब मैं निर्णय को Overturn तो कर नहीं सकता हूँ आसानी से करूँगा तो सवाल जवाब पूछे जाएंगे, तो उन्होंने एक और निर्देश दिया कि आगे से मिनट्स तो बाद में आएंगे पहले committee का एजेंडा मैं approve करूँगा उसके बाद ही committee की meeting होगी तो एजेंडा में आइटम लाने के लिए आपको मंत्री के पास जाना पड़ेगा ये परिस्थिति थी सरकार की, अब एक-एक करके chop किया | आज मेरे पास मात्र चार पांच फाइल दिन में आती हैं तो बहुत है | सब कुछ ऑटोनोमी दे दी है अधिकारियों को और कहा है कानून व्यवस्था है प्रोसीजर है इसको फॉलो करो deviation allowed नहीं है इसके हिसाब से सब को सामान्य न्याय मिले, इसी प्रकार से financing, मैं Chartered Accountant हूँ Investment Banker रहा तो एक अच्छा लाभ मिला कि सरकारी पैसा आप को याद होगा प्रधानमंत्री ने कहा था मैं एक रुपया केंद्र से देता हूँ तो जनता तक पहुँचते-पहुँचते 15 पैसा रह जाता है, प्रधानमंत्री मोदी जी की सरकार ने इस formula को या इस algorithm को change किया हमने अपने अधिकारियों को कहा है कि अगर सरकार एक रुपया खर्चा करे तो उसका दो रूपए का लाभ कैसे जनता को मिले वो तरीका सोचो, कुछ innovative thinking लाओ, innovative financing लाओ, मेरे LED bulbs एक तरीके से उसका जीता जगता उदाहरण है LED bulbs | 2014 तक सरकारी कंपनी छे लाख बल्ब एक साल में वितरण करती थी, एक साल में छे लाख बल्ब ! वो कंपनी Rs 310 में 7W का बल्ब खरीदती थी, हमने कहा ये बल्ब का लाभ कितना है, लाभ तो बहुत बढ़िया निकला, बहुत अधिक निकला तो जैसा प्रधानमंत्री जी ने चुनाव के पहले कहा था आपको याद होगा एक स्लोगन Speed, Skill और Scale काम को विस्तार बढाओ, काम की तेज़ी बढाओ, रफ़्तार बढाओ और कुशलता से करो | हमने LED प्रोग्राम में इन तीनों का लाभ लिया और ये निर्णय लिया कि पूरे देश के जितने बल्ब हैं जो 60-80-100 W की बिजली फूकते हैं इसको LED bulbs से रिप्लेस किया जाए रोशिनी भी बढ़ेगी और बल्ब के दाम भी गिरेंगे जब आप बड़े पयमाने पे करोगे | आपको भाइयो और बहनों जान के ख़ुशी होगी आज के दिन जो बल्ब सरकारी कंपनी साल में 6 लाख दिया करती थी जो Rs 310 में खरीदती थी 7W का बल्ब अब केंद्र सरकार 9 W का बल्ब मात्र Rs 55 में खरीदती है, Rs 54.90 to be precise, 83% घटे है दाम पारदर्शिता और ईमानदारी से खरीदने से और अब 77 करोड़ बल्ब हम अगले तीन वर्ष में पूरे देश में हर बल्ब को LED बना देंगे | और आज के दिन 6 लाख बल्ब एक साल में बेचने वाली कंपनी आज के दिन 6 लाख बल्ब हर रोज़ बेचती है, everyday. जब इस स्केल पे काम होता है तभी तो जाके Rs 40,000 crores की बिलों में बचत भारत की जनता को मिलेगी इस मात्र एक कार्यक्रम से, एक कार्यक्रम से Rs 40,000 crores की बचत, सरकार का कितना पैसा लगा, अनुमान लगाना है कुछ, कोई लगा सकता है अनुमान? एक रुपया नहीं लगा, शून्य ! आपका लगा लेकिन वो Rs 500-600 नहीं जो LED bulb मेरी पत्नी ने खरीद् के मेरे घर पे लगाए थे, तीन साल पहले आपको देना पड़ता है Rs 10 शुरू में मुझे लगता है शायद 7-8 महीने के लिए Rs 10 और देते हो क्यूंकि लोकल टैक्सेज ऐड होते हैं उसका वितरण का खर्चा होता है, ब्याज लगता है, सब मिलाके Rs 80-85 में अभी ये बल्ब मिलता है वो भी किश्तों में, 8-9 महीनों में, 90. तो अलग-अलग राज्य की local taxes अलग हैं उसके हिसाब से निर्धारित होता है और आपकी बचत कितनी होती है Rs 250, किसी के Rs 200 किस के घर में ज्यादा महंगा बिजली आती हो, ज्यादा खपत हो तो Rs 500, सालाना इतनी बचत तो आपका पेबेक तो 4-5 महीने रह गया कई लोगों का तो 2 महीनों में इसकी पूरी भुगतान हो जाती है, तीन साल की गारंटी, साधारणता ये सात-आठ वर्ष तक चलते हैं ये बल्ब, तो इनोवेटिव तरीका हो सकता है जिससे एक रूपए के निस्बत आप दो रूपए का लाभ ले-दे सकते हो जनता को. एक पारदर्शिता की बात मैंने पहले भी की, आपने कोयले की नीलामी देखी, कोयले की खदानों की, आपने स्पेक्ट्रम की नीलामी देखी, हर एक तरीके से इस सरकार ने पारदर्शिता लायी, लगभग हर एक पहलू पर सरकार ने हर पहलू में Highest level of transparency पे बल दिया है और एक भ्रष्टाचार-मुक्त शासन देश के समक्ष रख के लोगों में विश्वास

जगाया है कि ये जब छटाई ऊपर से शुरू होती है तो इसका प्रभाव आखरी छोर तक आपके हवलदार और वार्ड ऑफिसर तक पहुंचेगा हमें इसका पूरा विश्वास है |

एक आखिरी मूल मंत्र जो मुझे प्रधानमंत्री से सीधा सीखने को मिला, ये भी एक मात्रा में कोयले की खदानें और LED bulb से जुड़ा है, मैं परिपेक्ष इसलिए दे रहा हूँ कि प्रधानमंत्री की सोच आपको इससे दर्शाएगी, मैं एक दिन कोयले की खदानों का रिपोर्ट देने गया था, कैसे चल रहा है, व्यवस्था क्या बनाई है, कैसे नीलामी होगी, उनके निवास स्थान में सुबह का समय था जब मैंने पूरा ब्यौरा दे दिया और उठने ही लगा तो उठते-उठते मुझे सिर्फ पूछा पीयूष LED bulb कितने निकल गए हैं अभी तक, मैं चौंक गया मैंने कहा सर मुझे एकदम अभी तक का फिगर याद नहीं है पता नहीं है, मैं जानकारी लेके आप को बताऊंगा, बस मैं लगभग कुर्सी से खड़ा ही हुआ था और उन्होंने प्रश्न पूछा, मैंने कहा मुझे ध्यान में नहीं है मेरे पास जानकारी भी नहीं है, मैं पता लगाके आपको बताऊंगा, कहा पीयूष इस तरीके से कभी काम में सफलता नहीं पाओगे, काम की सफलता होनी है तो आपको उसकी निगरानी करनी पड़ेगी, रेगुलर मोनिटरिंग करनी पड़ेगी और जब आप निगरानी करोगे, मॉनिटर करोगे काम को तो तभी आप लोगों को ज़िम्मेदार ठहरा सकते हो, जिसकी ज़िम्मेदारी है उसको भी एहसास होगा कि मेरे काम की निगरानी हो रही है, निगरानी होगी तो काम होगा, ईमानदारी से होगा, गुणवत्तापूर्वक होगा, समय से होगा बस इतना एक वाकया मैं समझता हूँ अगर मेरे दो वर्ष के कार्यकाल में मेरे लिए कोई सबसे बड़ी सबक जो तीस वर्ष के शायद मेरे व्यापारिक जीवन में जब मैंने उद्योग चलाया Investment Banker के रूप में काम किया, कभी मुझे एहसास नहीं हुआ इस छोटे से मूल मंत्र के महत्व का If you don't monitor the work you can never hold anybody accountable and unless you hold people accountable you can never be successful. और मैं समझता हूँ इसकी पराकाष्ठा प्रधानमंत्री जी खुद हैं, जिस प्रकार से वो हर चीज़ पे नज़र रखते हैं, हम सब के काम की समय समय पे निरीक्षा करते हैं, हम सबकी जिम्मेदारियों का एहसास हम सबको भी दिलाते है, अधिकारियों को भी, अफसरों को भी, उस मूलमंत्र पे आज इस सरकार ने इतनी बड़ी-बड़ी उपलब्धियां इस देश को दीं हैं कि अगर कोई 66 वर्ष के देश के कार्यकाल को इस दो वर्ष के कार्यकाल के सामने खड़ा रखे तो मुझे पूरा विश्वास है ये सरकार खरी उतरेगी, ये सरकार ने जनता की सामान्य जनता की, गाँव में रहने वाला गरीब, किसान, शोषित, पीड़ित जनता, महिलाएं, युवा, युवती सब वर्ग को छूने का काम किया है उनके जीवन में सुधार का काम किया है, काले धन पे जिस प्रकार से प्रहार इस सरकार ने पहले दिन से, पहली कैबिनेट की बैठक में, मैं तो नहीं था पर हर्षवर्धन जी थे, पहली बैठक में SIT का गठन किया गया काले धन को रोकने के लिए, अभी-अभी कल मन की बात में भी प्रधानमंत्री जी ने जिकर किया कि इस सरकार की प्राथमिकता है और ये एक बार का जोर लगाने की ज़रुरत है | भाइयो और बहनों अगर आप सबका आशीर्वाद मिले खासतौर पे जो Professionals हैं Chartered Accountants, Tax Consultants, अगर सब लोग ये निर्णय लेलें कि हम इस भ्रष्टाचारी समस्या को ख़तम करना चाहते हैं, अगर सब निर्णय लेलें कि काले धन के ऊपर अब ये आखिरी मौका है जिस के पास जो भी काले धन की उपलब्धि है, या जिसने जो asset create किया है, चाहे वो पैसा हो, सोना चांदी हो, property हो, एक बार उसको declare करने की opportunity मिली है, 30 सितम्बर तक, तीन महीने बाकी हैं, हम सब, विनोद जी हम सब Chartered Accountants, सब Professionals इसपे विशेष अपने क्लाइंट्स को, व्यापारियों को, अपने मित्रों को, परिवार में सबको समझाएं कि भाई इस मौके का फायदा लें, इस मौके के हिसाब से हम सब जो भी पुराना किया करा है उसको माफ़ी, एक बार declare कर दे कोई पूछेगा नहीं कहाँ से आया, कैसे आया, कोई आपको तंग नहीं करेगा इसके ऊपर | एक बार अपना दामन साफ़ कर दें, 30 सितम्बर तक opportunity, आखरी वक़्त तक भी रुकने की ज़रूरत नहीं है, end end में इतना ज्यादा pressure होता है कि computer crash हो जाता है | अभी से अपनी calculation planning करके अगर हम अपने दामन को साफ़ कर लें क्यूंकि मैं समझता हूँ ये कभी ना कभी इस भस्मासुर को इस देश से ख़तम करना पड़ेगा और इसमें हमें आपका आशीर्वाद चाहिए आपका सहयोग चाहिए, आपका समर्थन चाहिए | अगर पूरा समाज ये तय कर ले कि हम सब ईमानदारी से काम करेंगे, राजस्व भरेंगे, कर भरेंगे तो आप सोचिए level playing field हो जाएगा, फिर ये नहीं होगा कि दो लोगों की चोरी की वजह से 98 लोगों को अधिक बिजली का बिल भरना पड़ेगा आखिर चोरी तो दो चार दस लोग करते होंगे लेकिन बिजली की कीमत बाकी सब के ऊपर भर जाती है, अगर हम सब ज़िम्मेदारी से काम करेंगे तो मैं समझता हूँ इस compliance window को भी लेके एक आखिरी मौका है इसमें काले धन को ख़तम करें, एक नया पन्ना लिखें भारत के इतिहास में, यहाँ सब कुछ व्यवस्थित हो, पूरा कर भरे जाएं और आप विश्वास करिए अगर सब अपना कर पूरा भरते हैं तो taxes के दर भी कम किए जा सकते हैं जिसका लाभ सभी को मिलेगा | इस प्रकार से एक नई सोच से अगर हम एक इस सरकार के साथ नाता जोडें, इस सरकार के किए हुए कामों को आप अगर सभी चाहें तो मैं आपसे दरख्वास्त करूँगा अपने-अपने मोबाइल पे एक मिस्ड कॉल देदें

1800 2090920, तो आपको एक SMS पे message आएगा उस पे प्रधानमंत्री मोदी जी का जो एप है, नरेन्द्र मोदी एप उसका एक लिंक मिलेगा उस लिंक से आप सीधा Google Play store या Apple store में जाएगा आपका स्मार्ट फ़ोन और आप उसको डाउनलोड करलें अपने फ़ोन में तो चौबीसों घंटे आपको लेटेस्ट न्यूज़, क्या-क्या काम हो रहा है देश भर में, आपको कुछ सुझाव देना है तो उसमें, ये दो तरफ़ा एप है, एक तरफ़ा नहीं है सिर्फ प्रधानमंत्री जी आपसे बात नहीं कर रहे हैं, आप भी प्रधानमंत्री से बात कर सकते हैं, आप भी उसमें सुझाव दे सकते हैं, कोई कंप्लेंट हो, कोई फीडबैक हो, कोई suggestion हो, कोई परेशानी हो, कोई भ्रष्टाचार का मुद्दा आपके समक्ष आए इन सब जानकारियों से आप हमें अवगत कराएं तो प्रधानमंत्री कार्यालय से उसपे पूरी कार्यवाई होती है, हम सब मंत्री उसपे गौर करते हैं, तो एक बहुत अच्छा आपके हाथ में शस्त्र बनेगा ये नरेन्द्र मोदी एप | मैं आप सब से दरख्वास्त करूँगा और सतीश जी हम पूरे दिल्ली में सभी कार्यकर्ताओं को और सभी अपने समर्थकों को प्रोत्साहित करें कि प्रधानमंत्री से सीधा जुड़ें, सीधा इस एप को अपने फ़ोन पे डाउनलोड करें, मैं समझता हूँ अगर हम सब ने इस सरकार को अपना लिया, अपना समझा, अपना समझ के इस सरकार के साथ जुड़े तो आगे आने वाला भविष्य इन दो वर्षों की उपलब्धियों से भी और अधिक तेज़ गति से उपलब्धियां इस देश में सबको स्वाद मिलेगा, लाभ मिलेगा | पंडित दीन दयाल उपाध्याय का जो सपना था इस वर्ष हम उनकी सौवी जन्मशताब्दी मना रहे हैं, उनके सपने को साकार करने जो सरकार अन्त्योदय की कल्पना लेके निकली है इस देश के गरीब, इस देश के गाँव में बसने वाले लोग, इस देश के किसान, इस देश के नौजवान युवा-युवतियों इनके सम्पूर्ण विकास 360 degree development की जो कल्पना दीन दयाल जी ने रखी थी उस कल्पना को साकार करने के लिए जो सरकार आपने चुन के भेजी है आप के अथक परिश्रम, खून पसीना एक करके आप सब ने हर्षवर्धन जी हम सब को ये मौका दिया है मैं आप से ये दरख्वास्त करता हूँ इस सरकार से आप जुड़ें और ज्यादा अधिक हम प्रयत्न करें, अब और अवसर आने वाले हैं आपके पास छ महीने में जिसमें फिर एक बार स्थापित कर दें कि भारतीय जनता पार्टी एक मात्र पार्टी है जो इस देश में सम्पूर्ण विकास और परिवर्तन के प्रति समर्पित है और हम सब मिलके इस देश को विकसित देश का दर्जा दिलाएं और जो विश्व में विश्व गुरु बनाने की कल्पना प्रधानमंत्री जी, अध्यक्ष अमित शाह जी और हम सभी कार्यकर्ताओं की है इस सपने को साकार करने में आइए हम सब मिलके काम करें |

बहुत बहुत धन्यवाद!